Raj Express (Indore), 03rd December 2025, Page - 05

अंतरराष्ट्रीय दिव्यांग दिवस आज : दिव्यांग खुद कर रहे फूड डिलेवरी कार्य

आज दूसरों के लिए प्रेरणा बन रहे हैं शहजाद

एक फूड डिलेवरी कंपनी ने दिव्यांगों के लिए बदल दिए नियम

● इंदौर/ राहुल शेलगांवकर

दिव्यांगजन अब हर क्षेत्र में अपेनी पहचान बना रहे हैं और आत्मनिर्भर बन रहे हैं। सरकार और विभिन्न संगठनों की पहल, साथ ही उनके अपने दृढ़ संकल्प और प्रतिभा ने इसे संभव बनाया है। इंदौर में भी एक ऐसे ही दृढ़ संकल्पित दिव्यांग है शहजाद अली, जो खुद तो फूड डिलेवरी का काम करते है, अब दूसरों को भी इस काम में जोड़ रहे है। एक फूड डिलेवरी कंपनी ने तो दिव्यांगों के लिए विशेष रूप से नियम बदल दिए है, साथ ही उन्हें सामान्य लोगों से दो-तीन गुना ज्यादा पारश्रमिक दिया जा रहा है।

देश भर में रोल मॉडल बने शहजाद : दुनिया भर में 3 दिसंबर को अंतरराष्ट्रीय दिव्यांग दिवस मनाया जाता है। लेकिन दिव्यांगों के लिए कौन कितना करता है यह तो दिव्यांग ही जानते हैं। लेकिन खजराना क्षेत्र में रहने वाले 34 साल के शहजाद अली खुद तो दिव्यांग है ही दूसरों को भी आत्मनिर्भर बना रहे है। शहजाद को एक ऐसी बीमारी हैं, जिसमें हड्डियां बार-बार टूट जाती है। ये एक रेयर बीमारी है। लेकिन

उनके हौसले बुलंद है आज वे देशभर में फूड डिलेवरी करने वाले दिव्यांगों में रोल मॉडल बन चूके है। उन्हें कई कंपनियां अपना ब्रांड एम्बेसेडर बना रही है। उनके हौसले से अन्य दिव्यांग युवा भी इस काम से जुड़ रहे है।

ऐसे जुड़े फूड डिलेवरी के काम से: शहजाद ने बताया कि लॉकडाउन खत्म होने के बाद एक बार फिर नौकरी तलाशी तो यंग इंडियन वाले आगे आए और मुझे फूड डिलेवरी कंपनी से जोड़ा। किराए का मकान और वो मुश्किलों वाले दिन, चुनौतियां भी खूब रहीं । फिर मैंने दो साल पहले आईआईटी चेन्नई की बनाई विशेष व्हीलचेयर को खरीदा, जो बाइक और व्हीलचेयर में बदल जाती है। इसमें इंदौर की संस्था ने साथ दिया।

कंपनी ने भी बदला अपना साफ्टवेयर अपडेट किया

फूड डिलेवरी कंपनी ने भी दिव्यांगों से फूड डिलेवरी करवाने के लिए अपना साफ्टवेयर अपडेट किया। दिव्यांगों को एक बार फूड डिलेवरी करने सामान्य लोगों से दो-तीन गुना ज्यादा है। वहीं ग्राहकों को भी साफ्टवेयर में आप्शन आता है कि क्या आप दिव्यांग से फूड डिलेवरी करवाना चाहते है। जिसके कारण आपको ही आपका सामान लेने उनके पास जाना पड़ेगा।

25 लोगों को जुड़वाया काम से: खुद तो कुछ साल से फूड डिलेवरी का काम करते ही थे, वे अब उन्होंने और लोगों को भी इस काम से जोड़ लिया है, इंदौर ही नहीं भोपाल, उज्जैन, देवास के युवाओं को भी वे नई व्हीलचेयर बाइक दिलवा रहे है और उन्हें इस काम से जुड़वा रहे है।

एक लाख 10 हजार की व्हीलचेयर बाइक वितरीत की: फूड डिलेवरी कंपनी ने प्रदेश के 25 दिव्यांगों को फूड डिलेवरी के काम से जोड़ा है। इन दिव्यांगों को आधुनिक व्हीलचेयर प्रदान की, जो व्हीलचेयर और बाइक दोनों का काम करेगी। एक व्हीलचेयर की कीमत एक लाख 10 हजार रुपए है। ये व्हीलचेयर सांसद शंकर लालवानी की उपस्थिति में इन दिव्यांगों को दी गई। यंग इंडिया की चेयरपर्सन आरती जाजू ने बताया कि इस पहल का उद्देश्य व्हीलचेयर उपयोगकर्ताओं को उन्नत मोबिलिटी और रोजगार प्रदान करना है। हमने अब तक कुल 55 दिव्यांगों को ऐसी व्हीलेयर उपलब्ध कराई है। इंदौर में 25 और नागपुर में 30 दिव्यांगों को अत्याधुनिक व्हीलचेयरबाइक दी है।

प्रदेश में दिव्यांग क्रिकेट की पहचान बने ब्रजेश द्विवेदी

इंदौर। दिव्यांगता केवल शरीर की सीमा है, हौसलों की नहीं—और इसका सबसे जीवंत प्रमाण हैं। अंतरराष्ट्रीय दिव्यांग क्रिकेटर ब्रजेश द्विवेदी। बचपन से चलने में हाथों का सहारा लेना पड़ा, संघर्ष हर कदम पर मिला, पर साहस कभी नहीं टूटा। आज वही ब्रजेश भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं और मध्य प्रदेश में दिव्यांग क्रिकेट को नई पहचान देने वाले सबसे प्रमुख चेहरे बन चुके हैं। कभी टूटी लकड़ी, दपती और रेशमी धागे से बनाया गया एक छोटा-सा बल्ला उनका साथी था, आज वही खिलाड़ी भारत-नेपाल-बांग्लादेश सहित कई अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में चमक बिखेर चुके हैं। बांग्लादेश में आयोजित चार देशों की सीरीज में शानदार प्रदर्शन, भारत-नेपाल टेस्ट मैच में बतौर कप्तान मिली ऐतिहासिक जीत, और 2021 में शारजाह में डीसीसीबीई दिव्यांग प्रीमियर लीग में मुंबई आइडियल्स को सेमीफाइनल तक पहुंचाना—ये उपलब्धियां बताती हैं कि जुनून किसी भी सीमा से बड़ा होता है। ब्रजेश इसका सारा श्रेय आईआईटी इंदौर को देते है जिसने उन्हें फिर से अपने जूनून को जीने का सहयोग किया।